अध्याय-पंचम

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

अध्याय - पंचम

सारांश, निष्कर्ष, भविष्य अध्ययन हेतु सुझाव

प्रस्तावना

स्वास्थ्य–शिक्षा सैद्धातिक तथा व्यावहारिक रूप से सपूर्ण स्कूली शिक्षा का एक अभिन्न अग है। इसका उद्देश्य भी वास्तव मे शिक्षा के व्यापक उद्देश्यो के अनुरूप ही है। इसकी विषय वस्तु और शिक्षण पद्धति को भी सीखने की प्रक्रिया से बडा मार्गदर्शन प्राप्त होता है। यही कारण है कि छात्र केद्रित पाठ्यचर्चा का निर्माण, शैक्षिक इकाइयो का प्रयोग तथा स्कूल व समुदाय के सबधो पर जोर आदि ऐसी बाते है जिनका स्वास्थ्य–शिक्षा कार्यक्रम मे भी बडा महत्व है। इसलिए जब स्वास्थ्य–शिक्षा का समग्र शैक्षिक कार्यक्रम से पूर्ण सामजस्य होता है तो एक ओर जहा स्वास्थ्य–शिक्षा अधिक प्रभावी हो जाती है। वहा दूसरी ओर समग्र शैक्षिक कार्यक्रम की गुणवत्ता भी बढ जाती है। ऐसी शारीरिक तथा स्वास्थ्य–शिक्षा जिसका आधार जैविक, मानसिक, नैतिक तथा सामाजिक आवश्यकताए तथा बालको की क्षमता हो का उद्देश्य यह होता है कि शरीर पुष्ट बने सभी शारीरिक क्रियाओ के प्रति उचित दृष्टिकोण का निर्माण हो और सामाजिक व्यवहार का मानदण्ड ऊचा उठे। क्योकि शिक्षा का एक सामान्य तथा महत्वपूर्ण उद्देश्य स्वास्थ्य निर्माण भी है। प्रकृति ने प्रत्येक जीवधारी को एक ऐसी मशीनरी प्रदान की है जिसके सहारे वह अपनी प्राकृतिक क्रियाए सम्पन्न करता हुआ जीवनयापन करता है। 'भली प्रकार अपना कार्य करते हुए प्रत्येक अग का समुचित सचालन ही स्वास्थ्य है।'

इस प्रकार स्वास्थ्य ही जीवन का आधार है। जीवन को सुखमय बनाना महत्वपूर्ण ही नही, आवश्यक भी है। अच्छे स्वास्थ्य के बिना मनुष्य न स्वय प्रसन्न रह सकता है और न दूसरो को सुख पहुचा सकता है अपितु वह अपने तथा राष्ट्र के लिए बोझ बन जाता है।

समस्या कथन

"उच्च प्राथमिक शालाओ मे स्वास्थ्य एव शारीरिक शिक्षा की स्थिति का अध्ययन"

निरन्तर

उद्देश्य

1 शासकीय तथा अशासकीय उच्च प्राथमिक शालाओ मे खेल सबधी व्यवस्था का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2 शासकीय तथा अशासकीय उच्च प्राथमिक शालाओ मे स्वास्थ्य एव शारीरिक क्रियाओ के उपलब्ध साधनो का अध्ययन करना।

3 शासकीय तथा अशासकीय उच्च प्राथमिक शालाओ मे स्वास्थ्य–परीक्षण की व्यवस्था का अध्ययन करना।

4 शासकीय तथा अशासकीय उच्च प्राथमिक शालाओ मे उच्च प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियो को स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा हेतु करवायी जाने वाली क्रियाओ का अध्ययन करना।

सीमाए

1 अध्ययन मे भोपाल क्षेत्र की केवल आठ शासकीय और आठ अशासकीय उच्च प्राथमिक शालाओ से प्रतिदर्श लिया गया है।

2 शोधकर्ती ने शोधकार्य हेतु उच्च प्राथमिक स्तर की कक्षा छटवी, सातवी, आठवी को चुना है।

3 शोधकर्ती ने भोपाल के बी एच ई एल क्षेत्र से दो शासकीय व दो अशासकीय उच्च प्राथमिक शालाए व टी टी नगर क्षेत्र से दो शासकीय व दो अशासकीय शालाए, पुराने भोपाल क्षेत्र से दो शासकीय व दो अशासकीय शालाए तथा अरेरा कालोनी क्षेत्र से दो शासकीय व दो अशासकीय शालाओ का चयन किया गया।

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

निरन्तर

न्यादर्श चयन प्रक्रिया

प्रस्तुत शोध मे शोधकर्ती ने उच्च प्राथमिक शालाओ मे स्वास्थ्य एव शारीरिक शिक्षा की स्थिति का अध्ययन करने के लिए भोपाल की आठ शासकीय उच्च प्राथमिक शालाए और आठ अशासकीय उच्च प्राथमिक शालाओ का चयन किया है। न्यादर्श का चयन या दृच्छिक विधि से किया गया है।

इस शोधकार्य हेतु समस्त भोपाल को चार भागो मे विभाजित किया गया है। ये चार भाग है –

1 अरेरा कालोनी क्षेत्र
2 टी टी नगर क्षेत्र
3 पुराना भोपाल क्षेत्र
4 बी एच ई एल क्षेत्र

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

प्रत्येक क्षेत्र मे से दो शासकीय तथा दो अशासकीय विद्यालयो का चयन किया गया।

प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत लघु शोध प्रबध मे शोधकर्ती ने उपकरण के रूप मे प्रश्नावली तथा अवलोकन सारिणी का उपयोग किया है जिसमे एक प्रश्नावली विद्यालय के प्राचार्य के लिए एक प्रश्नावली खेल शिक्षको के लिए तथा एक प्रश्नावली विद्यालय के विद्यार्थियो के लिए बनाई गई। जो विद्यालय के दो–दो बच्चो से भरवाई गई। अवलोकन सारिणी बनाई गई जिसके द्वारा अध्ययनकर्ता ने स्वय जाकर विद्यालयो का अवलोकन किया।

प्रयुक्त साख्यिकी

प्रस्तुत लघु शोध प्रबध मे स्वास्थ्य एव शारीरिक शिक्षा की स्थिति दर्शाने के लिए प्रदत्तो को सारणीबद्ध किया है

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

निरन्तर

Regional Institute of Education LIBRARY

निष्कर्ष

1 शासकीय शालाओ मे शारीरिक शिक्षक का पद तो है नियुक्ति नही है अशासकीय शालाओ मे पद भी है और नियुक्ति भी है।

2 शासकीय शालाओ की अपेक्षा अशासकीय शालाओ मे योग्य शिक्षक है।

3 शासकीय शालाओ मे बजट अपर्याप्त है अशासकीय शालाओ मे बजट पर्याप्त है।

4 शासकीय तथा अशासकीय शालाओ मे खेल के लिए पर्याप्त समय दिया जाता है।

5 शासकीय तथा अशासकीय शालाओ मे क्रीडा स्थल पर्याप्त है।

6 शासकीय शालाओ की तुलना मे अशासकीय शालाओ मे कमरे तथा मैदानी खेलो की व्यवस्था पर्याप्त है। मैदानी खेलो मे खो–खो, दौड–कूद सबसे अधिक खेले जाते है।

7 शासकीय शालाओ की तुलना मे अशासकीय शालाओ मे अधिक खेल क्रियाओ को शाला वार्षिकोत्सव मे रखा जाता है।

8 शासकीय शालाओ मे खेल सामग्री अपर्याप्त है अशासकीय शालाओ मे खेल सामग्री पर्याप्त है।

9 शासकीय शालाओ मे सभी खेल क्रियाये नही करवायी जाती है। अशासकीय शालाओ मे सभी खेल क्रियाये करवायी जाती है।

10 शासकीय तथा अशासकीय शालाओ मे वर्ष मे एक बार स्वास्थ्य परीक्षण किया जाता है।

11 शासकीय तथा अशासकीय शालाओ मे शारीरिक शिक्षा का मूल्याकन के लिए

निरन्तर

गुणात्मक मापन किया जाता है।

12 शासकीय अशासकीय शालाओ मे छात्रो के ग्रुप का आधार कक्षा द्वारा किया जाता है।

13 शासकीय अशासकीय शालाओ मे पीने का पानी, अलग–अलग शौचालय व्यवस्था प्रकाश, खिडकिया, रोशनदान आदि की व्यवस्था है।

14 शासकीय शालाओ मे कूडेदान की व्यवस्था नही है अशासकीय शालाओ मे है।

15 शासकीय शालाओ मे छात्र टाटपट्टी पर बैठते है अशासकीय शाला मे कुर्सियो पर बैठते है।

16 शासकीय शालाआलो की तुलना मे अशासकीय शालाओ मे फेरीवाले खाद्य सामग्री ढककर रखते है।

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

सुझाव

उपरोक्त कारणो के आधार पर निम्न सुझाव प्रस्तावित है –

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के सभी तथ्यो का पालन किया जाना चाहिए। विद्यार्थियो की स्वास्थ्य एव शारीरिक शिक्षा सबधी सुविधाए खेल का मैदान, खेल सामग्री खेलने की किट आदि विद्यालयो मे उपलब्ध कराये जाने चाहिए। शिक्षको को शालेय स्वास्थ्य एव शारीरिक शिक्षा के कौशलो के अतर्गत प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। स्वास्थ्य एव शारीरिक शिक्षा को क्रियाकलाप तथा लिखित होना चाहिए।

स्वास्थ्य एव शारीरिक शिक्षा की गुणवत्ता हेतु हर उच्च प्राथमिक शाला मे स्वास्थ्य एव शारीरिक शिक्षक अवश्य होना चाहिए।

मूल्याकन की विधियो का प्रयोग किया जाना चाहिए।

निरन्तर

विद्यार्थियों का कम से कम वर्ष में दो बार स्वास्थ्य परीक्षण होना चाहिए।

स्वास्थ्य एव शारीरिक शिक्षा हेतु पर्याप्त बजट होना चाहिए।

खेल के लिए कम से कम 45 मिनिट का समय तो होना ही चाहिए।

स्वास्थ्य एव शारीरिक शिक्षा को समय सारिणी मे स्थान मिलना चाहिए।

विद्यार्थियो की शारीरिक स्वच्छता सबधी जाच सप्ताह मे होनी चाहिए।

स्वास्थ्य एव शारीरिक शिक्षा के लिए छपी हुई सामग्री होना चाहिए क्योकि शिक्षक पूरी तरह से छपी हुई सामग्री के बिना समझा नही पाते है।

भविष्य अध्ययन हेतु सुझाव

1 बालक एव बालिका शालाओ मे स्वास्थ्य एव शारीरिक शिक्षा की स्थिति का अध्ययन।

2 आदिवासी एव गैर आदिवासी विद्यालयो मे स्वास्थ्य एव शारीरिक शिक्षा की स्थिति का अध्ययन।

3 माध्यमिक शालाओ मे स्वास्थ्य एव शारीरिक शिक्षा की व्यवस्था का अध्ययन।

4 उच्च प्राथमिक तथा माध्यमिक शालाओ की खेल सबधी व्यवसाि का तुलनात्मक अध्ययन।

5 शहरी तथा ग्रामीण विद्यालयो मे स्वास्थ्य एव शारीरिक शिक्षा की क्रियाओ का अध्ययन।